Tender Heart High School Sector-33 B Chandigarh

कक्षा- नौवीं

विषय- हिन्दी साहित्य **शिक्षिका**- श्रीमतीकल्पनाशर्मा

पुस्तक : एकांकी संचय

पाठ-4 'सूखी डाली' (एकांकी) लेखक : उपेन्द्रनाथ 'अश्क'

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा नौवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य पुस्तक एकांकी संचय की पृष्ठ संख्या -39 पर दिए पाठ-4 'सूखी डाली' नामक एकांकी से जुड़े अतिरिक्त प्रश्नोत्तर पर चर्चा करेंगे।

सभी छात्र पाठ-4 को पूर्णतया से समझेंगे एवं पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर को स्वयं लिखने का प्रयास भी करेंगे।

* निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

"मैं कहा करता हूँ न बेटा कि एक बार वृक्ष से जो डाली टूट गई उसे लाख पानी दो, उसमें वह सरसता नहीं आएगी और हमारा यह परिवार बरगद के इस महान पेड़ की भाँति है।"

प्रश्न (1) ऐसी कौन - सी घटना घटी कि वक्ता के मन में इस प्रकार के विचार आए ?

उत्तर - दोपहर के भोजन के पश्चात् शायद बच्चे खेल रहे थे तथा झगड़ रहे थे। कर्मचन्द दादा जी से कुछ कहना चाहता है परन्तु बच्चों की खट - खट से वह परेशान है। इसलिए जगदीश को डाँटता है कि क्या खट - खट लगा रखी है, ज़रा आराम करने दो। अभी- अभी तो खाना खाकर बैठे हैं। तभी दादा जी

देखते हैं कि वट की पूरी डाली लाकर बच्चे आँगन में लगा रहे हैं और उस पर पानी भी दे रहे हैं। क्योंकि वे नहीं जानते कि वृक्ष की टूटी डाली जल देने से कभी नहीं पनपती। इस घटना को देखकर दादाजी के मन में इस प्रकार के विचार आते हैं।

प्रश्न (ii) दादा जी अपने परिवार की तुलना बरगद के पेड़ से क्यों कर रहे हैं? वे बरगद के वृक्ष को महान क्यों कह रहे हैं?

उत्तर - दादा जी अपने परिवार की तुलना बरगद के वृक्ष से इसलिए करते हैं क्योंकि दादा जी का परिवार बड़ा और भरा-पूरा है। उनके परिवार का एक मुखिया है, जो वे स्वयं हैं। उनकी बात परिवार के सभी सदस्य को माननी पड़ती है। जिस प्रकार बरगद का पेड़ फलता-फूलता है और अधिक समय तक जीवित रहता है। उसी प्रकार दादा जी भी कामना करते हैं कि उनका परिवार भी फलता-फूलता रहे।

प्रश्न (iii) उपर्युक्त कथन से दादा जी का क्या तात्पर्य है? वे क्या सोच रहे हैं?

उत्तर - उपर्युक्त कथन से दादा जी का तात्पर्य है कि जिस प्रकार एक बार वृक्ष से जो डाली टूट जाती है उसको कितना ही पानी दो, वह हरी-भरी नहीं रह सकती; अर्थात् पुनः नहीं पनप सकती, उसी प्रकार परिवार से यदि कोई व्यक्ति अलग हो जाता है तो वह फल-फूल नहीं सकता। इस समय वे कर्मचन्द की बात को लेकर छोटी पतोहू बेला के बारे में सोच रहे हैं। उनका परिवार भी बरगद की तरह पुराना है वे नहीं चाहते कि हमारा परिवार छिन्न-भिन्न हो।

प्रश्न (iv) प्रस्तुत एकांकी के माध्यम से लेखक क्या संदेश देना चाहता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- प्रस्तुत एकांकी 'सूखी डाली' जिसके लेखक बहुमुखी प्रतिभा के धनी उपेन्द्रनाथ 'अश्क' जी हैं। अश्क जी ने इस एकांकी में संयुक्त परिवार प्रणाली (परंपरा, प्रथा) का चित्रण किया है जो कि वास्तविक प्रतीत होता है। दादा जी के माध्यम से संयुक्त परिवार को प्रेम और सौहार्दता से संगठित करके रखना ही इस एकांकी का संदेश है। उनके अनुसार बरगद का वृक्ष संयुक्त परिवार है और उससे लगी डालियाँ परिवार का एक-एक सदस्य है। जिस प्रकार वृक्ष से डाली टूट जाने पर डाली सूख जाती है, उसी प्रकार परिवार का एक भी सदस्य यदि परिवार से अलग हो जाता है तो वह पनप नहीं पाता है। अत: इस बात को वे परिवार के सभी लोगों को समझाते हैं और छोटी बहू बेला जो कि अपने मायके से अधिक प्रभावित होने के कारण परिवार में सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाती है; उसका हृदय भी प्रेमपूर्वक जीत लेते हैं।

गृहकार्य

सभी छात्र पाठ-4 'सूखी डाली' एकांकी को ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे तथा समझेंगे। पाठ-4 के अतिरिक्त प्रश्नोत्तर, जो ऊपर दिए गए हैं, उन्हें पढ़कर अपने शब्दों में लिखने का भी अभ्यास करेंगे।

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]